श्रीसीतारामचंद्राभ्यां नमः

॥ अथ मधुरअलीकृत फुटकरपदावलीप्रारंभः ॥ रा० नटमलारी ॥ सखि दामिनिया दमकि रही ॥ बिरह न जात कही ॥ कोरे घटा घुमड़ि जल बरसत मोरवा सोर सही ॥ सुनत बोल पापी पपिहाके छाती जाति दही ॥ मधुरअली बिन मिले लालको नैनन नीर बही ॥ १ ॥ रा० नटमलारी ॥ सखि बरषा ऋतु आयगई ॥ मोरी पीतम सु धि न लई ॥ गरजि मेघ बरसन जल लागे पपिहा बोलि दई ॥ पवन झकोर बहत पुरवैया मोरवा सोर छई ॥ मधुरअली मनहरन लालबिन देखे दुख न जई ॥ २ ॥ नटमलारी ॥ सखी बड़े बूँदन जल बरसै ॥ हाय बिरह अँग सरसै ॥ बिन अवधेश लालको देखे मोरा जिय तरसै ॥ तेहिपर सोर मोर पपिहाके सुनि तोरति तृण करसै ॥ मधुरअली मेरी अँखियनमें रूप सांवलो दरसै ॥ ३ ॥

लावनी ॥ सखि अवधलाल बिन बिरहभरी मुरझाती ॥ अब कहा करौं कहँ जाउँ दरद करि घाती ॥ दोउ नैनन ढारत नीर नेहरसमाती ॥ करि सुरति सावँली रूप दहत नित छाती ॥ तृण तोरि ताकि तसबीर भई पछीताती ॥ कर मींजि शोचबश ठाढ़ि बीति गै राती॥ अब सुसकति सूनी सेज लखत न सुहाती ॥ छिन पल युग बीते जायँ दशा यहि भांती ॥ मैं कवन करमकी हीन हाय बिललाती ॥ लै मधुरअली उर श्वास हहाकरि खाती ॥ ४ ॥ लावनी ॥ सखि श्याम बिना सब सून दून दुख भारी ॥ तेहिते अति बिकल बिहाल बिरहकी मारी ॥ यकतो है सावन मास रयनअँधिआरी ॥ गरजत जल बरसत मेघ पवन गतिन्यारी ॥ मैं धरौं कवनबिधि धीर नयन बहैं बारी ॥ पपिहा दई मारो बोलि अधिक तन जारी ॥ कीजै कस कौन उपाय हाय

अब हारी ॥ खाये बिष बनत बिशेष यही मन-
धारी ॥ मोरे करत करेजे कहर जुल्फकी कारी ॥
मृदु हँसनि बिलोकनि बोलनि चलनिपै वारी ॥
मैं कौन कवन सुधि करों कवन दुख टारी ॥ मोरी
मधुरअली दिलदारने सुरति बिसारी ॥ ५ ॥
सखि राम कुँवरने सुरति दई बिसराई ॥ देखे
बिन बिकल बिहाल न परति रहाई ॥ करि प्रीत
नयनके बान मारि मुसक्याई ॥ हाय कसकत
हिय दिन रात गात पियराई ॥ अब ऐसो बिरह
झकोर जोर दुखदाई ॥ मन परत मधुरअलि
खाय जहर मरिजाई ॥ ६ ॥ लाल लषि मैं तो
बिकाय गई ॥ तबते छकी जकीसी डोलति तन
मन बिबश भई ॥ साँवली मूरति दृगन छई ॥
छिन पल कल न परत बिन देखे ऊबिकै श्वास
लई ॥ हाय बिरहा अतिदरद दई ॥ दारुण दुख म
कहौं कवनसों रटना श्याममई ॥ परत मन लै

अब जहर खई ॥ मधुरअली महबूब मिले बिन मेरो दुख न जई ॥ ७ ॥ नेह लगाये जात नँन-दोई ॥ प्रीतकी फाँस फँसी मोरी आली हाय रहब अब कसकै होई ॥ बढ़ी बिरहबश दरद दई री सियबर है कहत नहिँ कोई ॥ मधुरअली या हाल हमारी दिन भोजन निद्रा निशि खोई ॥ ॥ ८ ॥ रा० झंझोटी ॥ हमारी खबरि न भूल्यो मनके हरन हौ लाल ॥ मृदु मुसक्याय पिआय प्रेम रस डारि प्रीतिको जाल ॥ बदनचंद तुम्हरो लषि जबते लागत घर दुख हाल ॥ मधुरअली की रहो यहिपुर की सँघ कौशलपाल ॥ ९ ॥ अवधलाल बिन कल न परै मोहिँ बिरह बिकल भई बावरिया रे ॥ नहिँ सोहात धान धाम काम कछु बँधी नेहकी दाँवरिया रे ॥ दरदके मारे भई दूबरी चलतमें आवति तांवरिया रे ॥ मधुरअली आँखिनबिच झूलत मूरति खासी साँवरिया रे ॥

॥ १० ॥ रा० इमनी लावनी ॥ दई मोहिँ लालन बिसराई ॥ करि अति प्रीति पिआय प्रेमरस पुनि धरि निठुराई ॥ येक दिन उइ रहे सुखदाई ॥ अब छिन पल युग हाय बितावत अंगन पियराई ॥ खाय बिष मरबै मनभाई ॥ दुसह पीर सहिजात नही है अँसुवन बरसाई ॥ दरद वाके दिल नहिँ आई ॥ मधुरअली मन चहै करै सो कहँलागे दुख गाई ॥ ११ ॥ अवधलाल बिन हाय हमै कहुँ कल न परत है हो ॥ जबते लगनि कठिन अलि लागी करि करि सुरति राति भरि जागी तबते बिरह शरीर पीर अति जुलुम करत है हो ॥ पपिहा तापर बोल सुनावै गरजत मेघ बारि बरसावै सुनत महादुख होइ नहीं मन धीर धरत है हो ॥ मधुरअली कोकिलकी कूकैं सुनत उठत त्यों हियमें हूकैं कीजै कौन उपाय प्यारे बिन जियरा डरत है हो ॥ १२ ॥

मै देखि छयलछबि छकी सखी मुख बोलि न आवै रे ॥ पँचरँग पाग सीसमें सोहै कलँगी जड़ित मणिन मन मोहै भूषण सकल सुदेश सुभग अति अंग सुहावैं रै ॥ कुंडल कलित कपोलन हलकैं मनहुँ मीन मनसिज युग छलकैं जुलफैं जुलुफ जलूस बदनपर क्या छबि छावैं रे ॥ मधुरअली मीठी मृदु बतियां सुनिकै बेस जुड़ावति छतियां नैन पयन जनु बान मारि मनमथहिँ लजावै रे ॥ १३ ॥ तेरे नैना हैं जुलुम सिकारी रे ॥ मानौ सैफ सान अंजन धरि कतल करत नर नारी ॥ ऐसो छैल छली तू रसिया बांका अवधबिहारी ॥ ऐसो हाल करत निशि बासर मधुरअली बलिहारी ॥ १४ ॥ लाल हँसि जादू डारि गयो ॥ मेरी फेरि न खबरि लयो ॥ मृदु मुसक्याय छकाय मजेसे नैनकी सैन दयो ॥ धुरअली बिरहाके मारे दोउ दृग नीर छयो ॥

॥ १५ ॥ बिनै न मानत मोर अवधपिय रँगमे बोरि दई ॥ औंचक मिल्यो कुंज गलियनमें मैं जल भरन गई ॥ मृदु मुसक्याय नयनशर मार्‌यो बहियां पकरि लई ॥ मधुरअली रसिया छलवारो करि अनरीत नई ॥ १६ ॥ पिय प्यारी दोनो दी-हे गलबहिँया ॥सरजूतीर तमाल कुंज-बिच सुखदायक छहिँयां ॥ मंद मंद मुसक्यात परस्पर बातियां सुखमाहियाँ ॥ मधुरअली त्रिभु-वनमें देखे ऐसी छबि नहिँया ॥ १७ ॥ करु मन युगलरूपको ध्यान ॥ दशरथ लाल लली सुषमानिधि हैं दोउ जीवन प्रान ॥ बोलत मधुर सुधा जनु बरसत चित्त फँसानि मुसक्यान ॥ मधुरअली दंपतिकी पटतर लषि न परत कोउ आन ॥ १८ ॥ बनी छबि सियबनरीकी आज ॥ ब्याहबिभूषण जडित माणिनमै लसत सो अंगद राज ॥ बदनचंद मुसक्यान मनोहर लषि मोहत

रघुराज ॥ मधुरअली सो राम सुषमानिधि देख-
त रति भै लाज ॥ १९ ॥ अवधछयल मोती
वाला आली आया रे ॥ सुंदर छबि सबके मन
भाया रे ॥ अतिमनहरन सुभग अँग भूषण पाग
जरकस सीस सुहाया रे ॥ झमकदार कलँगी
क्या लटकी माणि माणिक तेहिमें छबि छाया रे
॥ कड़े बड़े हैं जड़े कमल कर धनुष बाण लै
चितहि चोराया रे ॥ सिंहठवनि वा चलनि मजेकी
हँसनि हाय मनमथहि ँ लजाया रे ॥ मधुरअली
दृग जुलुम जौंहरी कतल करत नहिँ अलिन
बचाया रे ॥ २० ॥ नहिँ भूलै सुरतिया लाल-
की ॥ वा बोलनि वा हँसनि माधुरी वा चितव-
नि छबिजालकी ॥ मंद मंद पग धरत धरणि-
पर क्या बाँकी गजचालकी ॥ मधुरअली प्यारे-
बिन व्याकुल ऐसी दशा भई बालकी ॥ २१ ॥
नैनोंकी तीरै मारि दिया ॥ घायल करि सजनी

मारगमें बांका छयलवा सियको पिया ॥ हँसनि हाय जनु बसीमंत्र है कहि बतियां मृदु मोहि लिया ॥ मधुरअली अतिदरदके मारे लाल मिले बिन जात जिया ॥ २२ ॥ सावँला मोतीवाला मेरे आंखोंमें झूलत है ॥ महबूब आली क्या बना दिलते न भूलत है ॥ बांकी तकनि जनु तीरसी हमारे हियमें हूलत है ॥ मधुरअली लालनसम दूसरा न तूलत है ॥ २३ ॥ अवध-लाल हँसि नैनबान मोरे मारि करेजे जात भयो रे ॥ औचक आज अली यहि मारग करि रस ख्याल न खबरि लयो रे ॥ तबते व्याकुल रहति रैन दिन खान पान सब बिसरि गयो रे ॥ मधुर अली दिलदार दरसबिन हाय करति दृग नीर छयो रे ॥ २४ ॥ हो प्यारो सुरति बिसराई ॥ नाहक प्रीति लगाई ॥ औचक मिल्यो मोहिँ सजनी री हँसि दृग बान चलाई ॥ तेहिकी हूल

.. मधुरअली बिरहाबश व्याकुल पीतम पाय जुड़ाऊँ ॥ ३५ ॥ झपूताल ॥ आजु अवधेशके महल मंगल भयो ॥ सुनत सुतजन्म नृप बिप्रगण बोलिकै देत बहु दान सनमान सो सुख छयो ॥ नभ नगर बजत निशान गह गह सुनत सुरगण हरषही ॥ बैठे बिमानन बधुन लै करि गान पुष्य सु बरषही ॥ सजि नारि कंचन थार कर लैकै मोद भरि महलन गई ॥ सोहिल सुहाव न गावतीं रनवास सुनि प्रमुदित भई ॥ तोरन बितान पताक ध्वज बहु द्वार सबके राजहीं ॥ मोतिनकी चौकैं चारु पूरीं बाजने बहु बाजहीं ॥ अवगाह आनँद जौन दिन दिन होत कबि नहिँ कहत हैं ॥ तहँ पायकै सुख मधुरअली कहतमें जकि रहत हैं ॥ ३६ ॥ नृपद्वार दुंदुभी बाजि रही ॥ रामजन्म सुनिकै अजनंदन हियमें हर्ष न जात कही ॥ भूषण बसन धेनु मणि माणिक मागैं द्विज सोइ देत वही ॥ आनँद अवध दकार

घर घर है कहुँ नकारको खोज नहीं ॥ ज॥ आय गाय क्या सोहिल सुनि रानी सब मोद लहीं ॥ मधुरअली ब्रह्मादि देव सब सुमन बर्षि जो समै चही ॥३७॥ करिकै प्रीति बिसरायो हो सखी श्याम मोरे नहिँ आयो ॥ करि करि सुरति हँसनि बोल-निकी कर मींजति पछितायो ॥ दिन नहिँ चैन रैन नहिँ निँदिया घर बन कछु न सुहायो॥मधुरअली मनहरनलालबिन हायँ नयन जल छायो॥३८॥मोहिं कल न परै दिन राति हो सखि लाल बिना अकुला-ती ॥ मृदु मुसक्यानि सुरति वा करिकै हाय दहत मोरी छाती ॥ छिन पल युगसम जात दई री शोच भरी पछितातीं ॥ मधुरअली दिलदार यारबिन बिरह किह्यो अँग घाती ॥ ३९ ॥

इति श्रीमधुरअलीकृत–युगुलविनोदफुटकरपदावली समाप्ता ॥

Printed by Vinayak Balkrishna Paranjpe at the Native Opinion Press, No. 2 Angria's Wadi, Girgaon, Bombay, and published by Vrajavalabha Hariprasad Bhagirathaji, House No. 331 Kalkadevi Road, Bombay, No. 2

शूल हिय कीन्हे हाय दरद नहिँ जाई ॥ मधुर-
अली महबूब मिले बिन अंगन बिरह सताई ॥
॥ २५ ॥ हो आली दहति मोरी छाती ॥ हाय
दरद नहिँ जाती ॥ जबते लाल अवध पगु धारे
तबते लिख्यो न पाती ॥ करिकै सुरति हँसनि
बोलनिकी कर मींजति पछिताती ॥ मधुरअली
अति प्रीति कठिन है नैन बहत दिन राती ॥२६॥
रा० कलँगडा॥छोंड़ो प्यारे बहियां मसकि गै चोली
रे ॥ छैल कहो छलिया नहिँ मानै हँसकैं घूंघुट
खोंली रे ॥ सैन सांग उर मारि जुलुम करि हाय
करत पुनि बोली रे ॥ हौं मैं बारि कुमारि न
बोलो बतियां लगत जनु गोली रे ॥ मधुरअली
फागुनके रँगमे नित उठि करत ठिठोली रे ॥ २७ ॥
रा० काफी॥ मोसे अवध छयलवा फागकी धूम
मचावै ॥ ऐसो छली गलीमें मिलिगो सैनकी
सांग चलावै ॥केसर रंग बोरि पिचकारी लै मोपर

बरसावै गुलालकी मार मचावै ॥ मोतिनमाल टोरि मेरे गरकी बहियां पकरि मुसक्यावै ॥ गावै फाग लै अनुज सखनको बांकी कबीर सुनावै जबर अति जोर जनावै ॥ ऐसो हाल लाल करि डाऱ्यो भवन कौनबिधि जावै ॥ मधुरअली डर सासु ननँदको को कहिकै समुझावै ॥ वोही गली अब नहिँ जावै ॥ २८ रा०कलँगड़ा ॥ मोरी सारी सवँलियाने बोरी रे ॥ करि बहु बिनै हाय मैं हारी ऐसी करी बरजोरी रे ॥ पुनि मुसक्या- य पकरि कर मेरो मसलि कपोलन रोरी रे ॥ मधुरअली घर जात बनै ना आई पियाकी चोरी रे ॥ २९ ॥ रा० बहार ॥ चटकीली चुनरि मोरी बोरि दई ॥ औंचक मिल्यो लाल सजनी री मैं सरजू जल भरन गई ॥ तेहिपर मसलि गुलाल गाल मेरे सैन मारि मुसक्यानि भई ॥ मधुरअ- ली तब झपटि लपटि मैं पिय पिचकारी छीनि

लई ॥ ३० ॥ रा० भैरवी ॥ लाल हँसि मोकर पकरि लिया ॥ तेहिपर मसलि अबीर बदनमें केसर रँग लै बोरि दिया ॥ करि कटाक्ष दृग बाण मारि उर मन भायो सोई हाय किया ॥ मधुरअली फागुनके रँगमें मातो छयल या सियाको पिया ॥ ३१ ॥ रा० कलँगड़ा ॥ लाल बहियाँ पकरि लई मोरी रे ॥ तेहिपर मेरी चटक चूनरी लै केसररँग बोरी रे ॥ नैनकी सैन मारि मुसक्या-वत मसलि कपोलन रोरी रे ॥ मधुरअली आते दीठ छयलबर कीन कठिन बरजोरी रे ॥ ३२ ॥ सवैया ॥ दशरत्थको लाल बड़ो छलवार गली-बिच फाग मचाय रह्यो ॥ वोहि औसर हे अलि आय परी तब छैलने मेरी सुबांह गह्यो ॥ पुनि मंजुअली मोहिँ रंगनसों बहु बोरि दयो नहिँ मौन कह्यो ॥ मुसक्याय कही रसकी बतियां दिलदार दगामधि जीत लिह्यो ॥ ३३ ॥ ठुमरी॥खटकी हिय

वीर अवधछयलछबि खटकी ॥ मुरँग पाग सिरपेंच जड़ित शिर मणिमै कलँगी लटकी ॥ जामा जवर जरीको राजत कटि फेंटा पितपटकी ॥ अति मनहरन छटा क्या बाँकी सुंदर नागरनटकी ॥ ऐसो रूप नहीं कोउ पटतर देखि फिरी मैं भटकी ॥ मधुरअली मेरी आंखिनमें झांकी लालकी अटकी ॥ ३४ ॥ आजु लषि जनक बागमें बिहरत राजकुमार ॥ श्याम गौर मनहरन छयल बर सुदंर अतिसुकुमार ॥ सुभग चौतनी सीस जगा मग उर मोतिनके हार ॥ धनुष बाण कर कमलन राजत सुषमा अमित अपार ॥ मंद हँसनि मृदु बोनि मजेकी चितवानि मारि कटार ॥ मधुरअली गज चलानि देखि करि बार बार बलिहार ॥ ३४ ॥ छयल छबि देखि छकी मैं भवन कवनबिधि जाऊँ ॥ औंचक मिल्यो मोहिँ मारगमें ठाढ़ी हाय पछिताँऊ ॥ जो कोउ देइ मिलाय लालको ताके पौं मैं

1678
श्री मणिराम दास